



# दृष्टिकोण, प्रभाव और प्रामाणिकता: युग-निर्माण का विज्ञान

विचारक्रान्ति और समयदान का  
तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”  
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और औप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर मेरे क्रान्ति सन्तो क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

## वर्तमान की बीमारी : आस्था संकट

स्वार्थपरता और अहंकार

बुद्धि विपर्यय

अशांति, प्रदूषण, व्यसन

सामूहिक पतन

**शरीर विज्ञान का नियम —**  
जैसे पाचन तंत्र खराब होने पर पूरा शरीर विषैला हो जाता है, वैसे ही विचार विकृत होने पर पूरा समाज बीमार हो जाता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” – पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

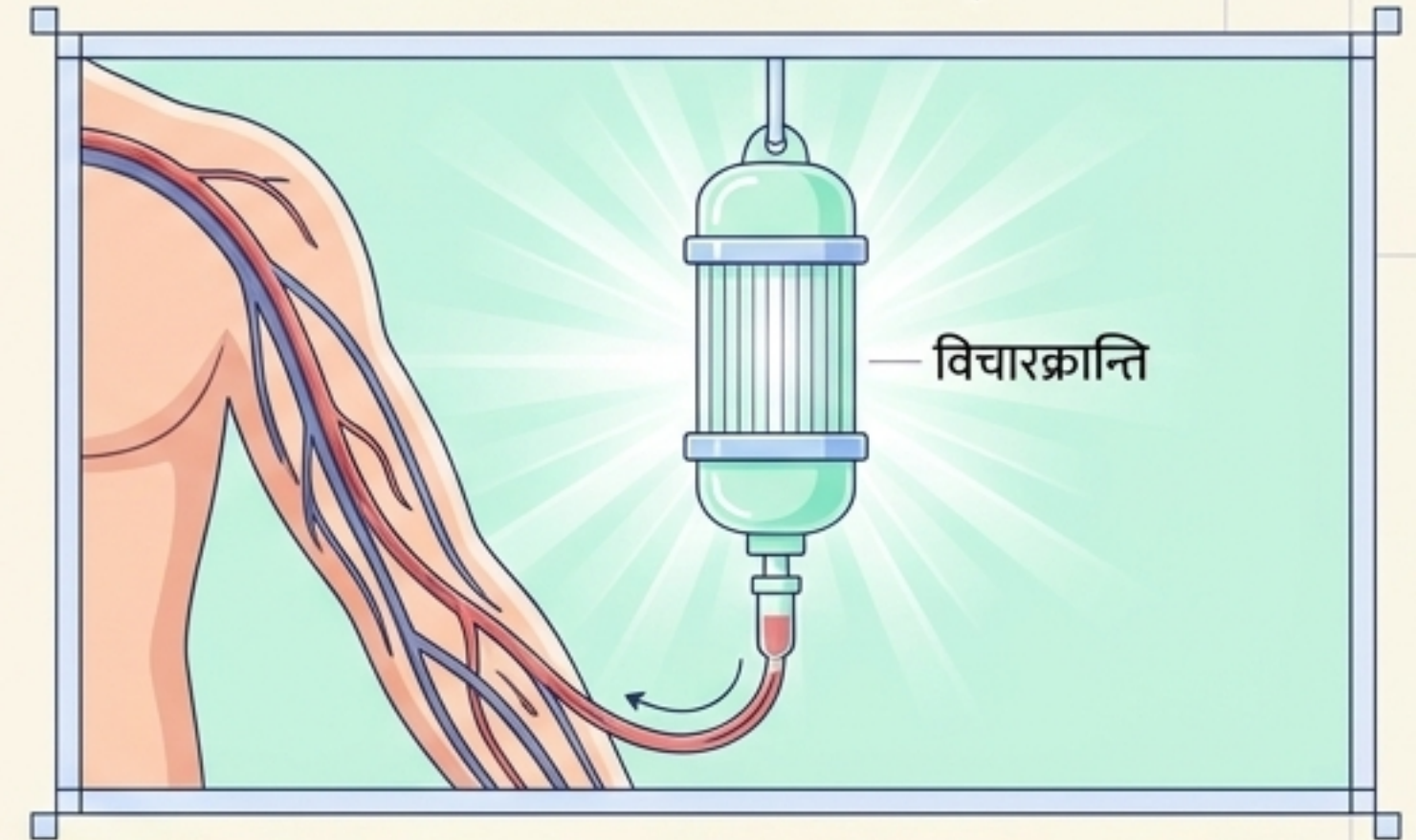
## उपचार का विज्ञान: जड़ बनाम शाखाएं

### अस्थाई सुधार (शाखाएं)



**विधि:** स्थानीय समस्याओं का सामयिक समाधान।  
**रूपक:** चेचक की फुंसियों पर केवल मरहम लगाना।  
**परिणाम:** बीमारी का बार-बार उभरना।

### स्थायी समाधान (जड़)



**विधि:** वैचारिक भटकाव को रोकने के लिए 'विचारक्रान्ति'।  
**रूपक:** रक्त-विकार का उन्मूलन / तूफानी वर्षा से प्राकृतिक सफाई।  
**परिणाम:** चेतना का स्थायी परिष्कार।

# विचारक्रान्ति का कॉग्निटिव फ्लोचार्ट



दृष्टिकोण में  
बदलाव

मान्यताओं का  
परिष्कार

आदतों और  
प्रचलनों में सुधार

समाज में एकता  
और समता



युग परिवर्तन

चश्मा जिस रंग का होगा, दुनिया वैसी ही

वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।  
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में  
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा  
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को  
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन  
तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति  
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

दर्पण में अपना ही चेहरा दीखता है।

# उपदेशकों की विफलता का डायग्नोस्टिक्स

## प्राचीन काल

- ✧ संख्या: अत्यल्प (जैसे सात ऋषि)।
- ✧ प्रभाव: अत्यंत गहरा और व्यापक।
- ✧ कारण: कथनी और करनी में पूर्ण समानता।

## वर्तमान काल

- ✧ संख्या: लाखों उपदेशक।
- ✧ प्रभाव: लगभग शून्य।
- ✧ कारण: वक्ता का आचरण शब्दों से मेल नहीं खाता। श्रोता को उपदेशक में 'पाखंडी' नज़र आता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।

ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति

पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया दो तार मिलने प्रकाश जन-जन के बीच के पखना ही चाहिए “मम बल्ल” —

बनि दस — पूज्य गुकिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान प्रकाश जन-जन के बीच बीच में पहुँचना ही चाहिए क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के)

# प्रभाव का भौतिक विज्ञान

मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक का

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक का पहुँचाने का प्रयास करें।”

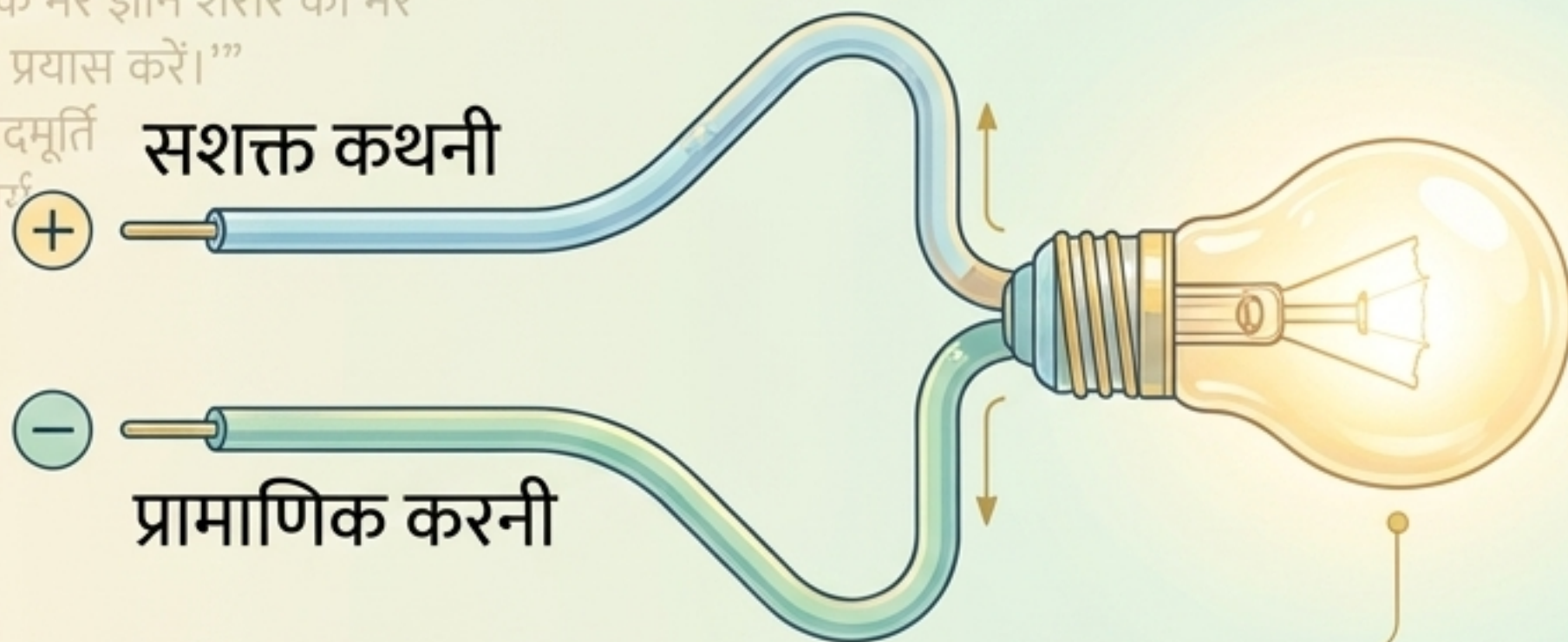
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ (गायत्री परिवार के संस्थापक)

झरझर हैं। १९९० को

## शक्तिशाली प्रभाव

— “मेरा ज्ञान शरीर ही ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का और प्रकाश जन-जन के कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे तिधर्मी साहित्य के रूप में तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — गुरुदेव वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम (गायत्री परिवार के संस्थापक)

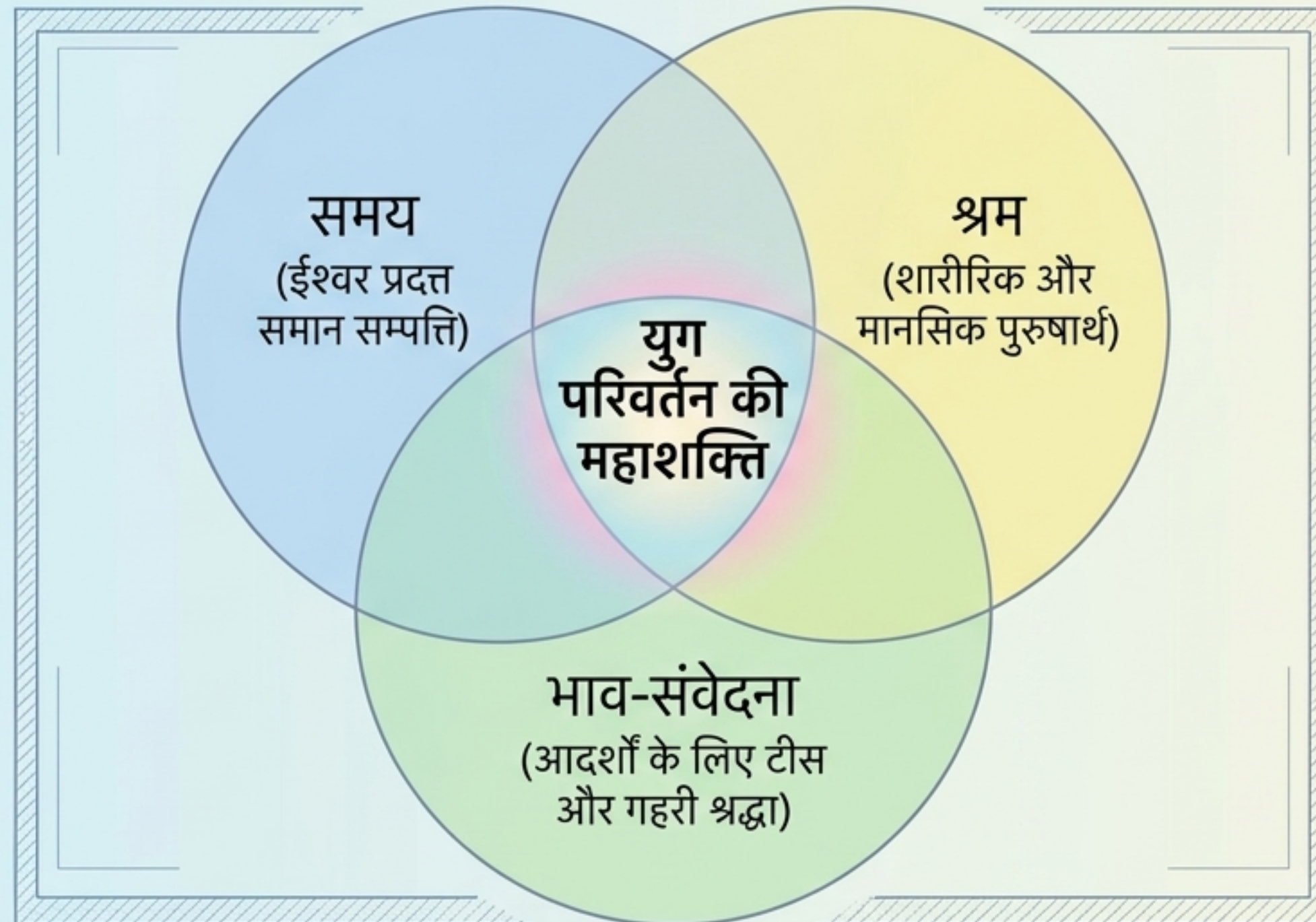


$$[सशक्त कथनी] + [प्रामाणिक करनी] = [शक्तिशाली प्रभाव]$$

**विद्युत धारा का नियम:** बिजली के दो तार मिलने पर ही करंट चालू होता है।  
यदि उपदेशक स्वयं आदर्शवादी नहीं है, तो सर्किट टूट जाता है और कोई बदलाव नहीं आता।

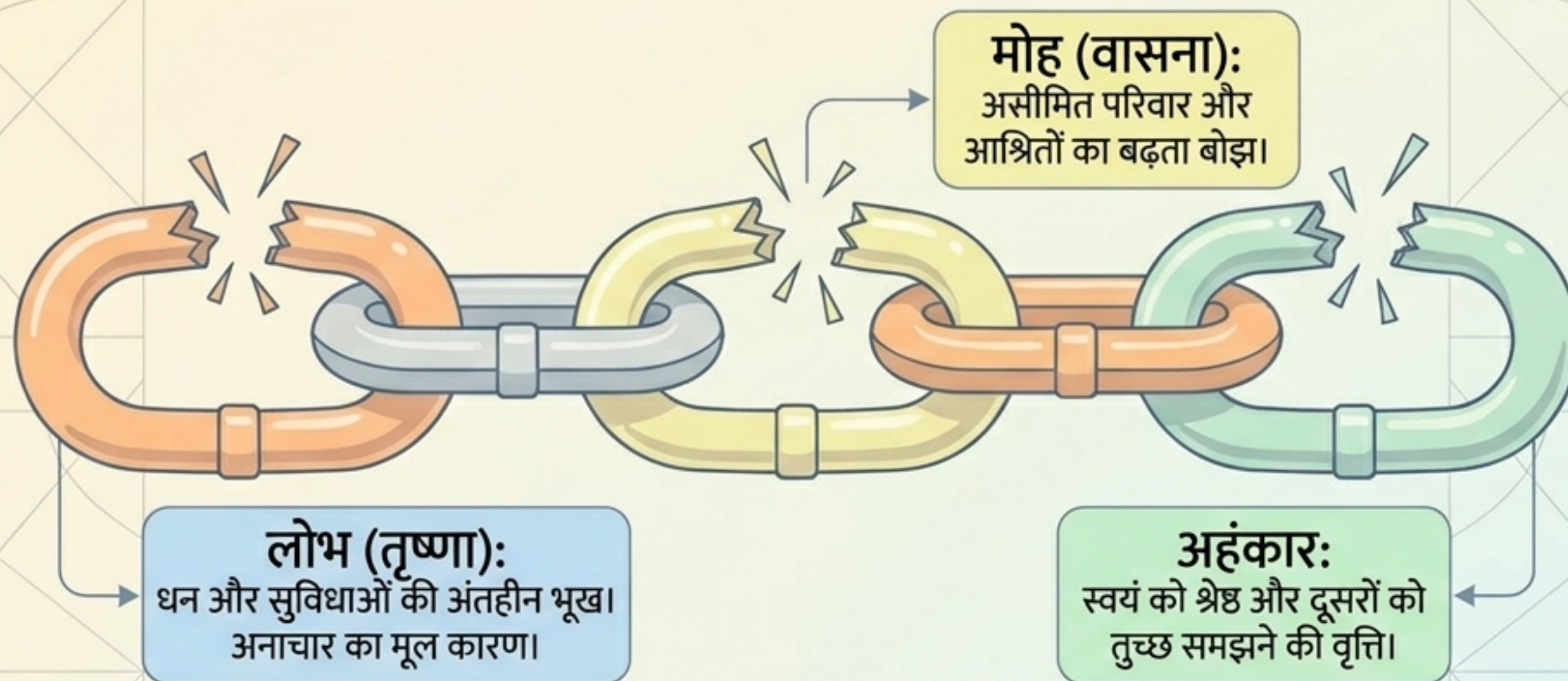
# समयदान की त्रिवेणी

समयदान कोई साधारण दान नहीं है, यह इन तीन ऊर्जाओं का वैज्ञानिक सम्मिश्रण है।



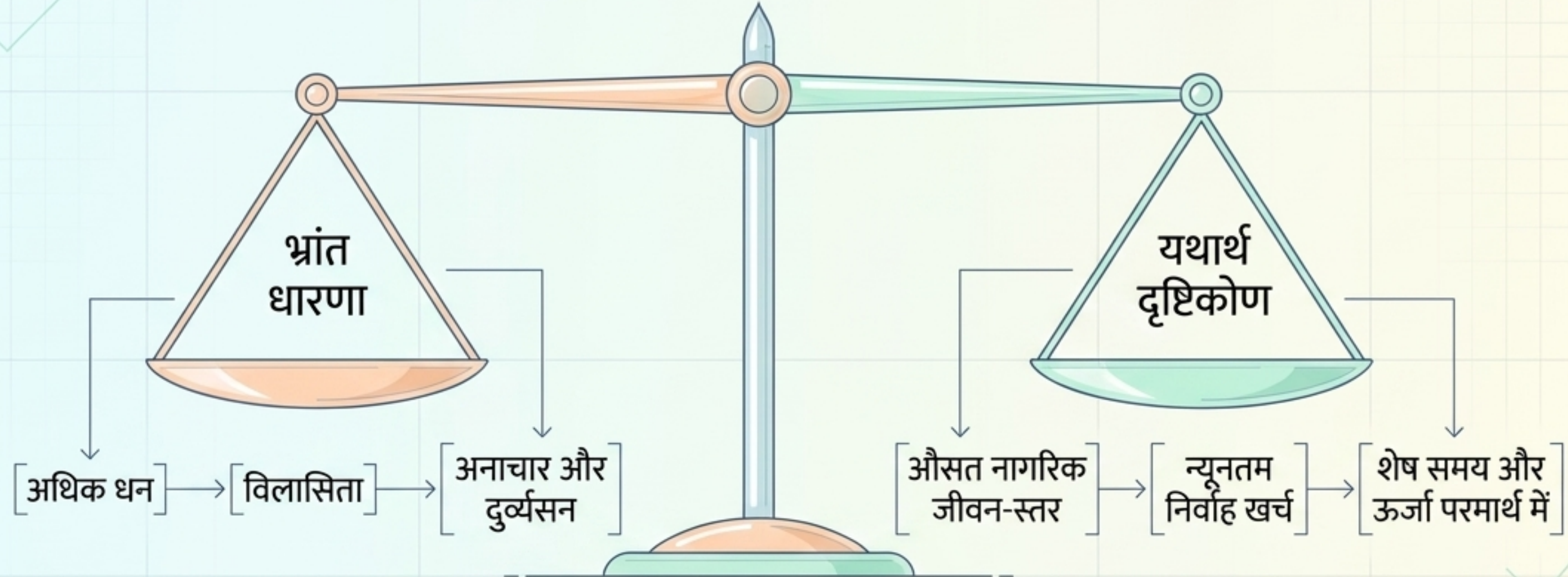
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा- सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

## मानव विकास की 3 मनोवैज्ञानिक जंजीरें



ये भव-बंधन व्यक्ति को महामानव बनने और समयदान करने से रोकते हैं।  
इन जंजीरों को तोड़े बिना नवसृजन संभव नहीं।

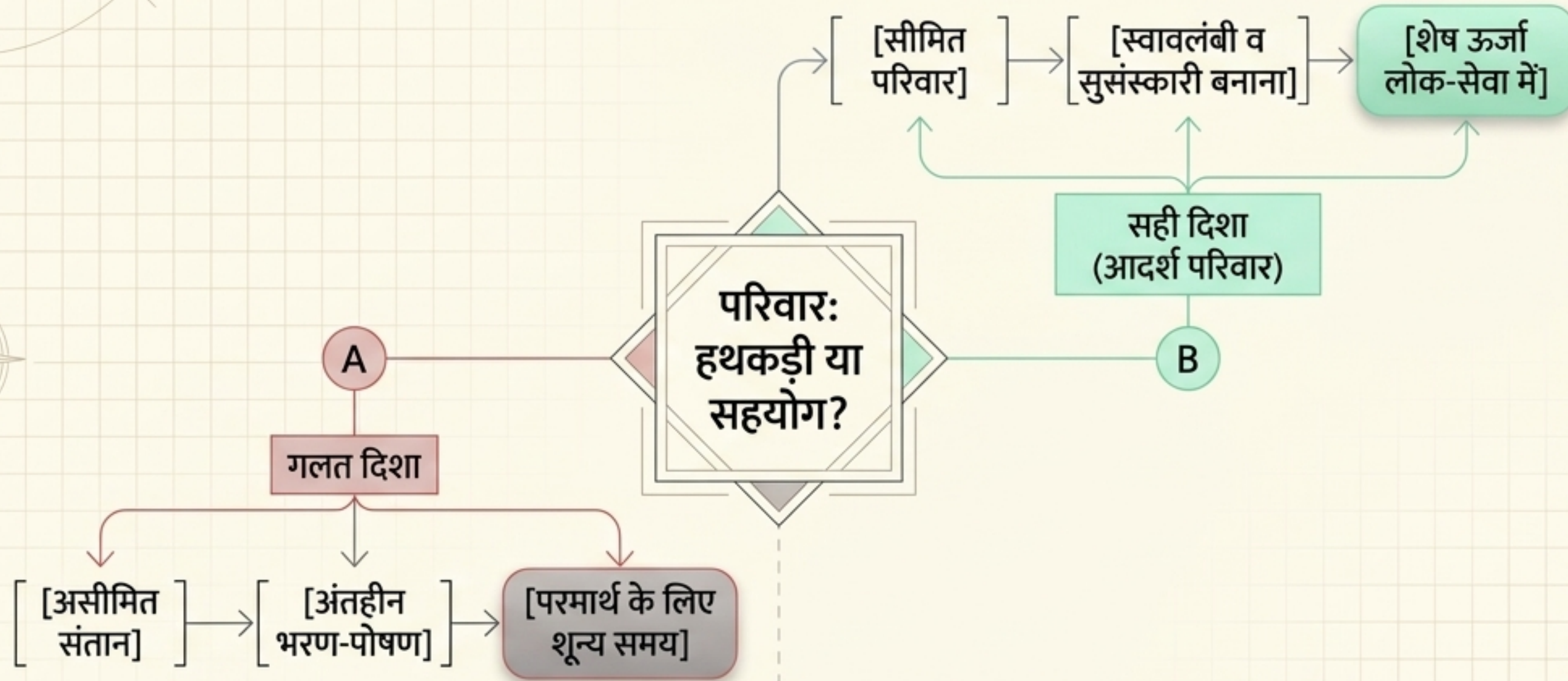
# बाधा 1: लोभ का डीकोडिंग



सतयुगी परम्परा — 'वानप्रस्थ'।  
जीवन का आधा भाग समाज को समर्पित करना ही सच्ची संपन्नता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

## बाधा 2: मोह का प्रबंधन



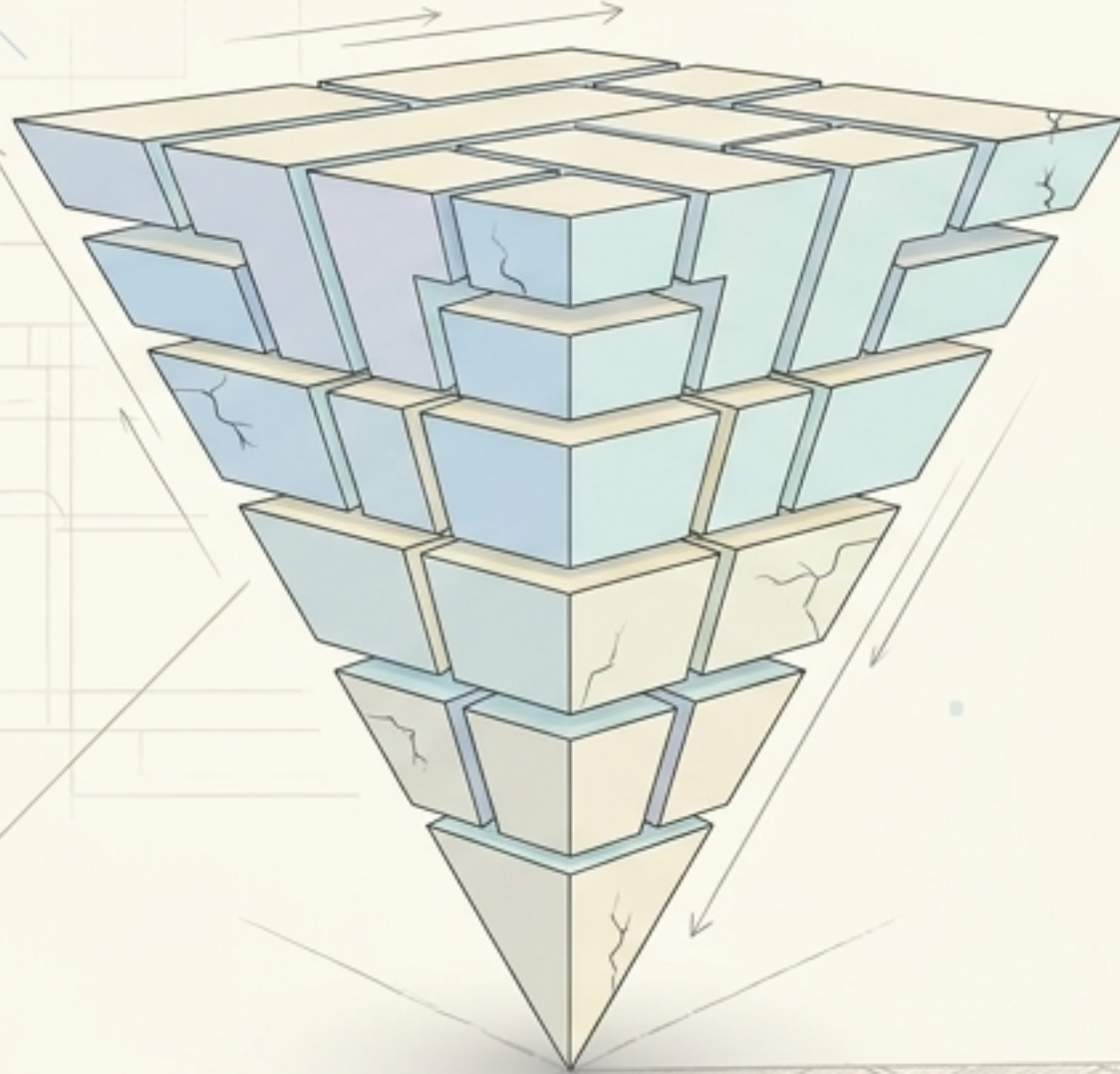
विवाह-बंधन तब सार्थक है जब पति-पत्नी उच्च उद्देश्यों के लिए जुड़ें और 'एक और एक ग्यारह' बनें।

वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही  
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर  
का प्रकाश जन-जन के  
बीच में पहुँचना ही चाहिए  
और आप सबसे कहियेगा  
सब बच्चों से कहियेगा  
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे  
क्रान्तिधर्मी साहित्य के  
रूप में जन-जन तक  
पहुँचाने का प्रयास  
करें।”

— पूज्य गुरुदेव  
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ  
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

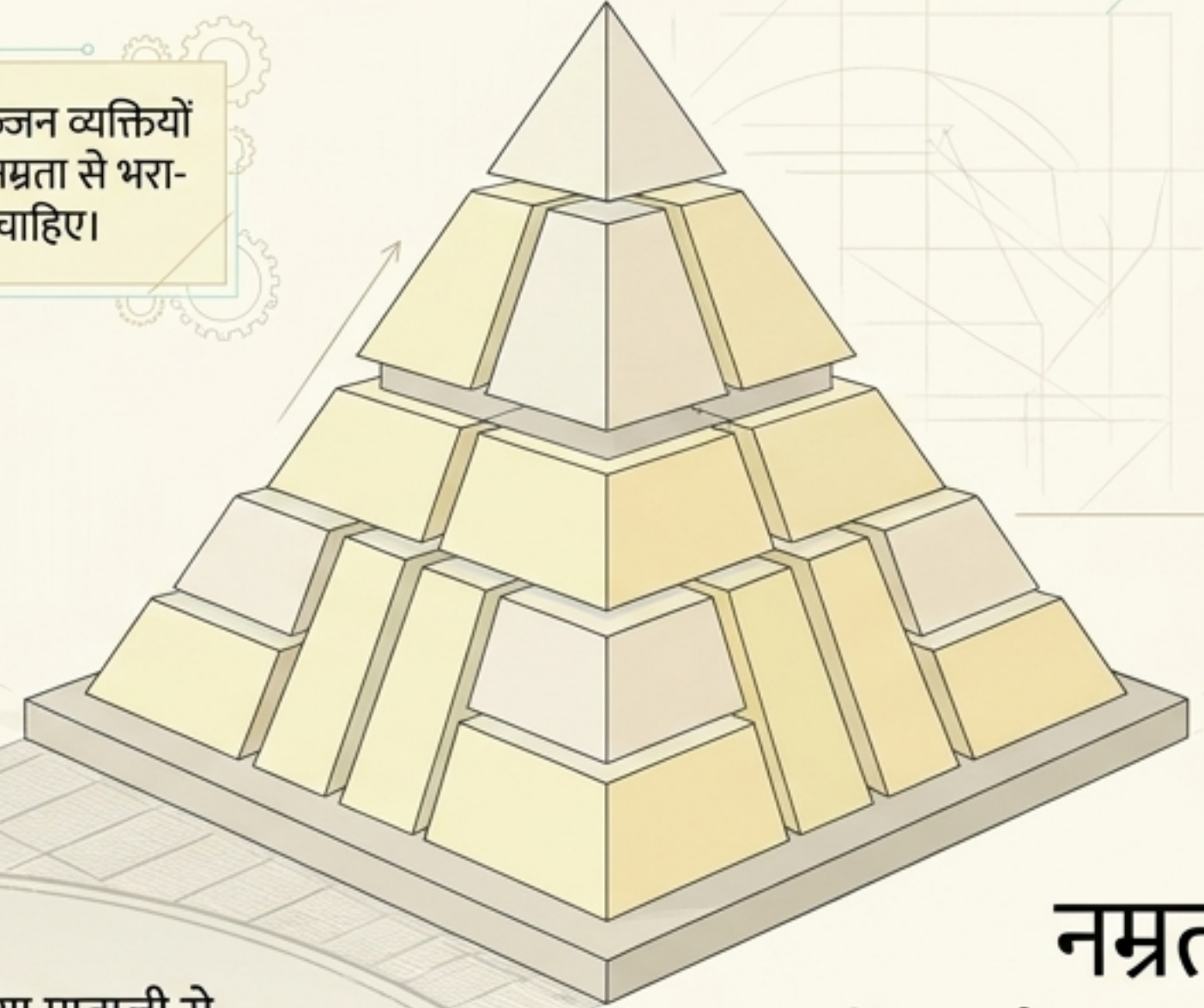
# बाधा 3: अहंकार का विघटन



## अहंकार

- क्रिया: खुद का ढिंढोरा पीटना + दूसरों की कमियां निकालना।
- परिणाम: मित्रहीन, अस्थिर और उपहासास्पद जीवन।

समान स्तर के सज्जन व्यक्तियों को अपना आपा नम्रता से भरा-पूरा रखना चाहिए।



## नम्रता

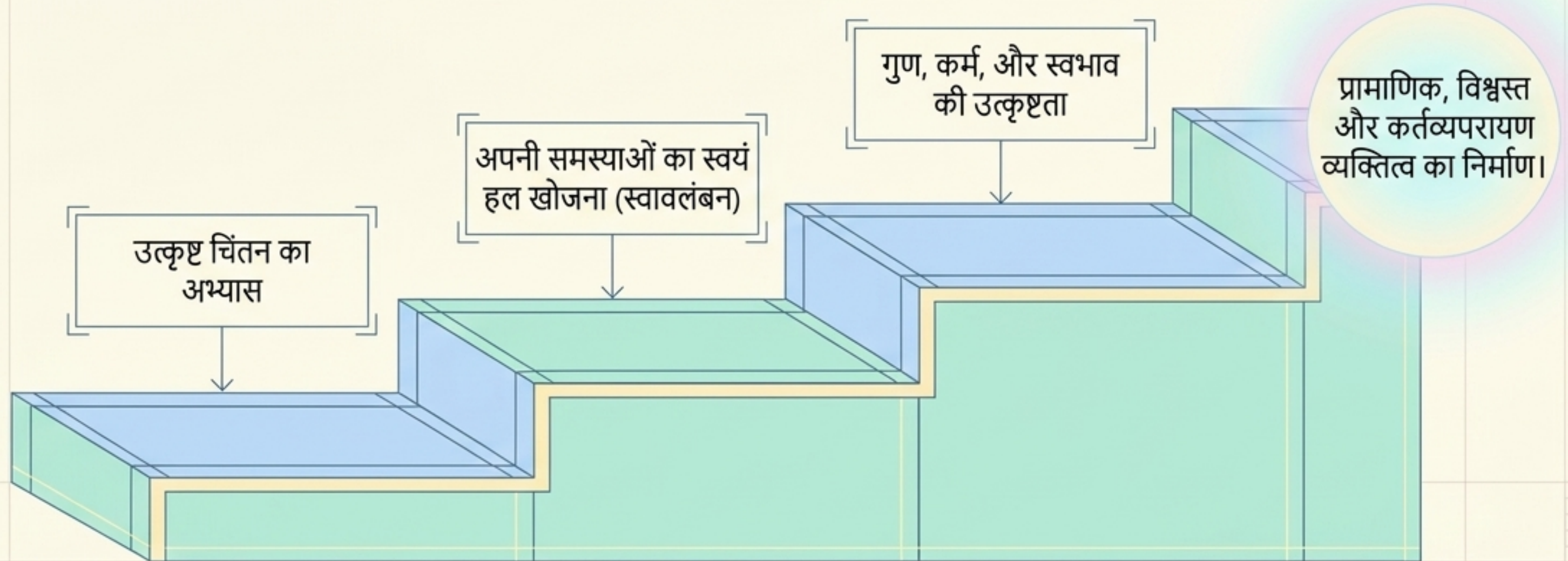
- क्रिया: दूसरों का सम्मान + शालीन व्यवहार।
- परिणाम: सच्चा स्नेह, स्थिर सहयोग और ठोस संगठन।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# सशक्तता का वास्तविक अर्थ

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



भ्रांति — दूसरों के अनुदानों और खैरात पर निर्भर रहना वास्तविक दीनता है।

# वीर से 'महावीर' की यात्रा

21वीं सदी को 'भगीरथ' और 'हनुमान' जैसे तपस्वियों की आवश्यकता है।

## वीर

वह जो दूसरों के अवगुणों और बाहरी शत्रुओं पर जीत प्राप्त करता है।

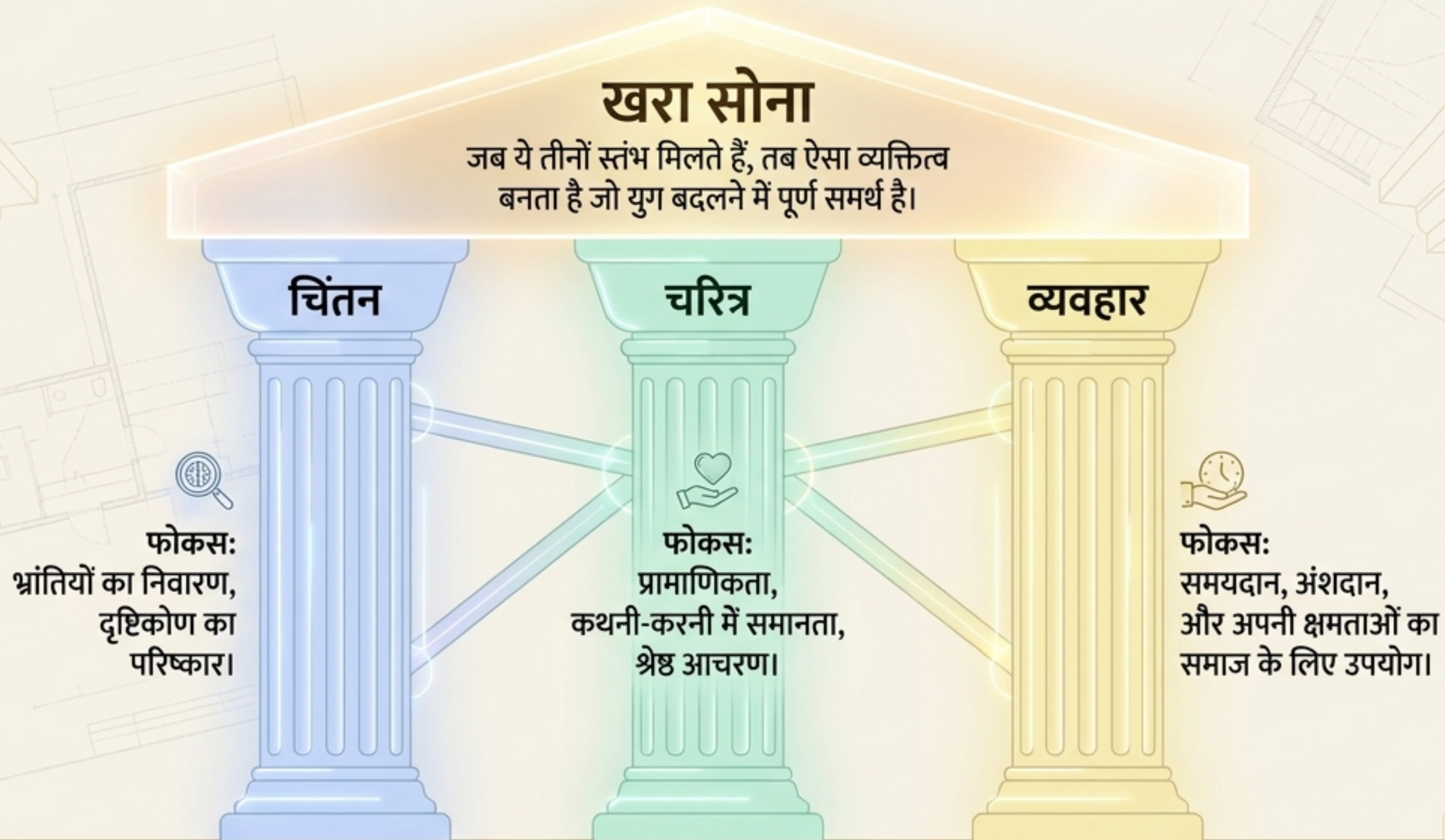
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —  
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्म साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”  
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

## महावीर

वह जिसने 'अपने आपको' (अपनी वासना, तृष्णा, अहंता को) जीत लिया हो।

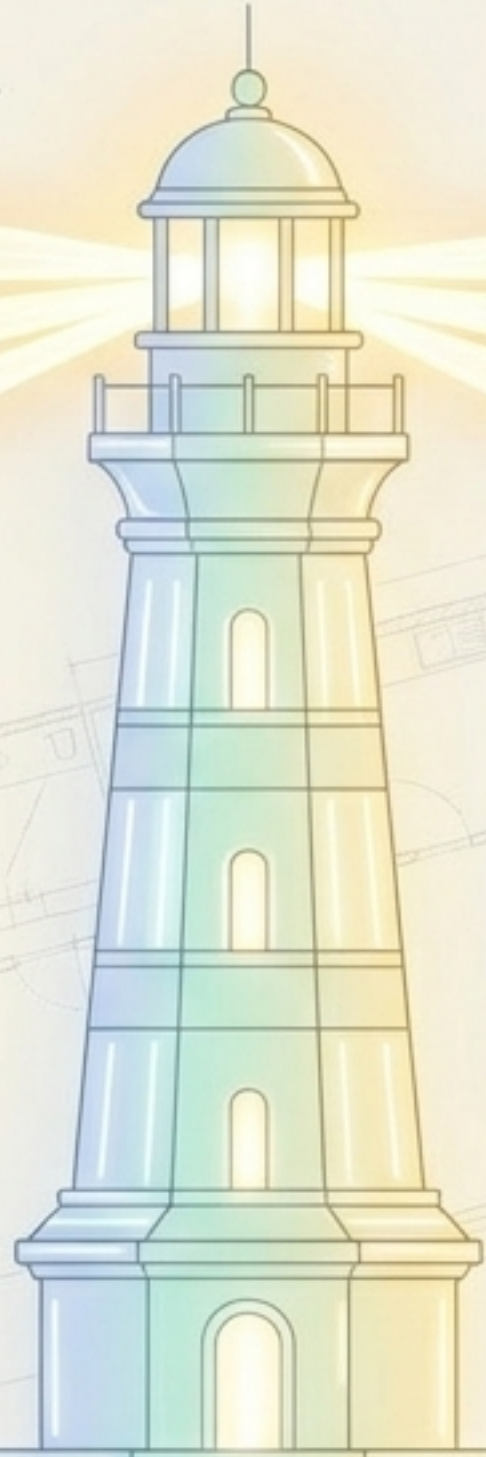
ऐसे आत्म-विजेता महामानव ही दैवी अनुग्रह के पात्र बनते हैं।

# सिंथेसिस मैट्रिक्स: नवसृजन का ब्लूप्रिंट



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# आह्वान: महाकाल की पुकार



यह युग-संधि की बेला है; इतिहास का नया अध्याय लिखा जा रहा है।



खोटे सिक्के दुत्कारे जाते हैं, खरे सोने की ही कीमत होती है।



अपनी सुप्त क्षमताओं को जगाएं और विचारक्रान्ति के लिए अपना सर्वोत्कृष्ट 'समयदान' दें।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”  
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)